3

ज्ञान एवं कौशल में अन्तर

(Difference between Knowledge and Skill)

(1) ज्ञान एवं कौशल के अन्तर

दो शब्द व्यक्ति के व्यक्तित्व को दर्शाता है। "ज्ञान एवं कौशल"। प्रथम दृष्टि में दोनों शब्द समान प्रतीत होते हैं किन्तु गहराई में जाने से दोनों शब्दों में बहुत अन्तर है।

ज्ञान का अर्थ विषयवस्तु, सिद्धान्तों तथा जानकारी को समझने तथा किसी विषय पर जानकारी होने से है जो कि पुस्तक, मीडिया एनसाइक्लोपीडिया तथा अन्य स्त्रोतों से प्राप्त की जा सकती है।

कौशल से अभिप्राय है—प्राप्त जानकारी को व्यवहारिक रूप से इस्तेमाल करना।

अन्य शब्दों में ज्ञान का अर्थ जानकारी से तथा कौशल का अर्थ प्राप्त ज्ञान को सफलतापूर्वक व्यवहारिक रूप में लाने से हैं।

उदाहरण के एक एम० बी० ए० के छात्र ने Marketing के समस्त सिद्धान्त अपने महाविद्यालय में पढ़े होंगे। व्यवसाय में आने के उपरांत अपनी कम्पनी के विषय में अधिक जानकारी भी संचित की होगी किन्तु कौशल में कुशलता अपनी Data के लक्ष्य को प्राप्त करने के उपरांत ही होगा। ट्रर्यल एवं एरर विधि कुशलता प्राप्त करने में महत्त्वपूर्ण विधि है। कुछ व्यक्तियों में कुशलता जन्मजात पायी जाती है तथा कुछ व्यक्तियों में समय के साथ अर्जित की जाती है। कुशलता व्यक्ति को आंशिक सफलता दिला सकती है। पूर्ण रूप से सफल होने के लिये ज्ञान आवश्यक है। सैधान्तिक ज्ञान अन्य व्यक्तियों के साथ बाँटा जा सकता है किन्तु कुशलता का ज्ञान स्वयं की मेहनत से ही अर्जित किया जाता है।

(2) शिक्षण एवं प्रशिक्षण में अन्तर

शिक्षण एक असल उपदेशक की क्रियाओं को कहते हैं जो शिक्षण को सुझान के लिये आकल्पित किया गया हो। शिक्षण एवं अध्ययन एक ऐसी प्रक्रिया है। जिसमें बहुत से कारण शामिल होते हैं। सीखने वाला जिस तरीके से अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ते हुए नया ज्ञान, आचार और कौशल को समाहित करता है ताकि उसके सीखने के अनुभवों में विस्तार हो सके वैसे ही ये सारे कारक आपस में संवाद की स्थिति में आते रहते हैं।

पिछली सदी के दौरान शिक्षण पर विभिन्न किस्म के दृष्टिकोण उभरे हैं। इनमें एक है ज्ञानात्मक शिक्षण, जो शिक्षण को मस्तिष्क की एक क्रिया के रूप में देखता है दूसरा है रचनात्मक शिक्षण जो ज्ञान को सीखने की प्रक्रिया में की गई रचना के रूप में देखता है। इन सिद्धान्तों को अलग-अलग देखने के बजाय इन्हें सम्भावनाओं की ऐसी श्रृंखला के रूप मे देखा जाना चाहिए जिन्हें शिक्षण के अनुभवों में पिरोया जा सके।

शिक्षण विशिष्ट ज्ञान कौशल या क्षमताओं की सीख के साथ शिक्षार्थियों को तैयार करने की दृष्टि से संदर्भित है, जो कि तुरन्त पूरा करने पर लागू किया जा सकता है। प्रशिक्षक का काम होता है प्रशिक्षण लेने वाले के विचारों, अवधारणाओं और चिंताओं को बाहर निकालना। इसके लिए पहले वे उन्हें यह निश्चय करने में

मदद करते हैं कि वे ठीक किस विषय में बात करना चाहते हैं और जो कहा जाता है उसे दोहराते हैं ताकि प्रशिक्षण लेने वाले स्वयं अपने विचारों तथा अवधारणाओं को सुन सके।

गेरार्ड ओ डोनोवन के अनुसार "प्रशिक्षण का अर्थ किसी व्यक्ति, जो बढ़ते रहने में आपका पथप्रदर्शन करेगा, की व्यक्तिगत और निजी सहायता के माध्यम से अपना सर्वोत्तम कार्य प्रदर्शन करना।"

CIPD-009—प्रशिक्षण का मतलब किसी व्यक्ति के कौशलों और ज्ञान का विकास करना है ताकि उनके काम में उनका प्रदर्शन सुधर जाये, जिससे संगठनात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति हो सके।

शिक्षक को लक्ष्य की जानकारी (Knowledge of Teaching Aim)—शिक्षक को शिक्षण से सम्बन्धित शिक्षण के लक्ष्य की जानकारी होनी चाहिये ताकि आपेक्षित उद्देश्यों की प्राप्ति करने के लिए वह पर्याप्त साधन व सुविधाएँ शिक्षण के लिए एकत्रित कर सके।

उचित शिक्षण विधि एवं सहायक सामग्री का प्रयोग (Application of Proper Teaching Methods and Aids)—कुशल शिक्षक सदैव विषय प्रकरण एवं कक्षा स्तर के अनुकूल शिक्षण विधि का उपयोग करता है और शिक्षण में प्रभावशीलता लाने के लिये उचित सहायक सामग्री का भी सामंजस्य करता है।

- शिक्षण व्यक्ति की क्षमताओं का विकास है।
- शिक्षण का क्षेत्र बहुत विस्तृत है।
- शिक्षण लम्बे समय तक चलता है।
- शिक्षण प्रदान करने के लिए स्थान घर, स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय, धार्मिक संस्थाएँ समाज आदि हैं।
- शिक्षण सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक दोनों तरह का होता है।
- शिक्षण का पाठ्यक्रम विस्तृत होता है।
- शिक्षण कठोर एवं प्रणालीगत प्रयत्न का अनुसरण नहीं करता।
- शिक्षण में विधियों की सीमा बहुत विस्तृत होती है।
- सामाजिक अनुशासन को महत्त्व दिया जाता है।
- मूल्यांकन के साधन बहुत विस्तृत होते हैं।

प्रशिक्षण
(Training)

प्रशिक्षण शिक्षण का एक महत्त्वपूर्ण अंश है। अगर हम शिक्षण की तुलना एक दायरे से करें तो प्रशिक्षण उसका एक छोर है। प्रशिक्षण के दौरान क्रियाशील प्रक्रिया समाहित होती है। प्रशिक्षण व्यक्ति को व्यवहार का स्तर निर्धारित करने में सहायता प्रदान करता है। इसके पीछे कार्यक्रम तैयार किए जाते हैं। विद्यार्थी शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययन कौशल विकसित करने के लिए प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। इसी तरह इंजीनियर, कलाकार, सैनिक, पायलट, डाक्टर, नर्स इसके अतिरिक्त दूसरे व्यवसायों से सम्बन्धित अपने क्षेत्र से सम्बन्धित कौशल विकसित करने के लिए भी प्रशिक्षण दिया जाता है। इन सभी परिस्थितियों में कोई अनुदेशक हमेशा प्रशिक्षण देने के लिए होता है।

निपुणता को विकसित करने के लिए प्रशिक्षण एक उत्तम कार्यक्रम है। यह प्रशिक्षक के अनुदेशों के अधीन योजनाबद्ध ढंग से तैयार किया जाता है। इसे व्यवसायिक पाठ्यक्रम और पुनः स्थापन प्रशिक्षण में शामिल किया जाता है। प्रशिक्षण का काल निश्चित समय के पश्चात् हम कहते हैं कि प्रशिक्षण समाप्त हो गया है। तब व्यक्ति उस क्षेत्र में एक योग्य व्यक्ति बन जाता है।

प्रशिक्षण की विशेषताएँ (Characteristics of Training)

प्रशिक्षण की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

(1) प्रशिक्षण औपचारिक ढंग से दिया जाता है। कुछ संस्थाएँ इसके पीछे काम करती हैं।

(2) प्रशिक्षण के लिए कुछ नियम होते हैं जो माननीय हैं।

(3) प्रशिक्षण क्षेत्र के योग्य व्यक्तियों द्वारा दिया जाता है।

(4) यह एक क्रियात्मक प्रक्रिया है।

(5) प्रशिक्षण एक व्यक्ति समाज के योग्य बना भी सकता है और नहीं भी।

(6) प्रशिक्षण के अन्तर्गत निपुण व्यक्ति मनुष्य के व्यवहार को बदलने का प्रयास करता है। किसी प्र तरह का वाद-विवाद इसमें संभव नहीं है।

(7) प्रशिक्षण शिक्षण का अंश है। शिक्षण का उद्देश्य व्यक्ति का चहुँमुखी विकास है जबकि प्रशिक्षण कुछ क्रियात्मक कुशलताओं में सहायक होता है।

(8) प्रशिक्षण का काल निश्चित होता है।

(9) यह विद्यार्थियों के लिए कठोर नियमों को लागू करता है।

(10) प्रशिक्षण में क्रियात्मक विकास पर अधिक बल दिया जाता है।

- प्रशिक्षण सीखने वाले की निपुणताओं के विकास एवं सम्पूर्णता को लागू करता है।
- प्रशिक्षण का क्षेत्र संकीर्ण है।
- प्रशिक्षण कुछ दिनों या कुछ महीनों के लिए हो सकता है।
- प्रशिक्षण केवल प्रशिक्षण संस्थानों में दिया जाता है।
- प्रशिक्षण में क्रियात्मक पक्ष पर अधिक बल दिया जाता है।
- प्रशिक्षण का पाठ्यक्रम निश्चित होता है।
- प्रशिक्षण कठोर एवं प्रणालीगत प्रयत्न का अनुसरण करता है।
- प्रशिक्षण में सीमित एवं निश्चित विधियों का प्रयोग किया जाता है।
- अनुशासन प्राय: कठोर होता है।
- मूल्यांकन के साधन प्रत्यक्ष होते हैं।

(3) ज्ञान तथा सूचना में अन्तर

मानव मस्तिष्क उस ज्ञान का भंडार है जो कि दैनिक जीवन अथवा रोजमर्रा के उपयोग में आते हैं मनुष्य अपने ज्ञान का विस्तार देखी सुनी, पढ़ी गई बातों तथा अपने अनुभव के आधार पर बनाता है। यह दृष्टिकोण ज्ञान, जानकारी, समझ तथा विवेक आदि विभिन्न वर्गों में बाँटा जा सकता है। ज्ञान, जानकारी का समन्वित रूप है। ज्ञान को सूचनाओं का समग्रीत रूप कहा जा सकता है।

सूचना का अर्थ उस जानकारी से है जो किसी भी माध्यम से प्राप्त की गई हो।

निर्दिर सामग्री या तत्म के अर्थ का सही होना आवश्यक होना आवश्यक नहीं है।

उदाहरण के तौर पर कम्प्यूटर के माध्यम से किसी भी सत्य अथवा असत्य या तथ्यों को प्रोसिस किया जा सकता है।

दैनिक जीवन विभिन्न सूचनाओं के आधार पर ही ज्ञान को बढ़ाया जा सकता है।

सही समय पर सही तरह से ज्ञान का उपयोग करना सही जानकारी है। जानकारी का अर्थ डेटा का एकीकरण कहा जा सकता है।

ज्ञान
(Knowledge)

1. ज्ञान सूचना का उचित संग्रह मात्र है जो इसे उपयोगी बनाता है।
2. ज्ञान सूचना मात्र है जिसे स्वयं की आवश्यकताओं के अनुरूप ढाला जाता है।
3. ज्ञान सूचना के विभिन्न सेटों के अन्तर्गत प्रतिरूपों की जाँच करता है।
4. ज्ञान प्राप्ति हेतु हमें संज्ञानात्मक एवं विश्लेषणात्मक योग्यता की आवश्यकता होती है।
5. ज्ञान प्रयोगकर्त्ता में निहित रहता है।
6. ज्ञान का उदय व्यक्तियों के मस्तिष्क में उनके अनुभवों के परिणामस्वरूप होता है।
7. ज्ञान समूहों के विश्वास का प्रतीक है तथा कार्यक्षेत्र में घनिष्ठ सम्बन्ध रखता है।
8. ज्ञान वह सार्थक सम्बन्ध है जो व्यक्ति अपने मस्तिष्क में किसी विशिष्ट सन्दर्भ में सूचना एवं इसके प्रयोग के मध्य बनाता है।
9. ज्ञान अर्थ के साथ सूचना है।
10. ज्ञान सूचना के प्रवाह के परिणामस्वरूप प्राप्त होता है।
11. ज्ञान अनुभवों, मूल्यों, सन्दर्भों, विशिष्ट दूरदृष्टि आदि का तरल मिश्रण (fluid mix) है।

सूचना
(Information)

जहाँ तक सूचना शब्द की व्युत्पत्ति का सम्बन्ध है, यह लैटिन शब्द "informare" (to inform) से बना है जिसका अर्थ है—'to give form to the mind', 'to discipline', 'instruct', 'teach' सूचना विभिन्न प्रकार के चिन्हों (sings) एवं संकेतों (signals) के रूप में प्रदान की जा सकती है। सूचना एक प्रकार का संदेश (message) है जो विभिन्न सन्दर्भों में (contexts) विभिन्न अर्थ, रखता है। इस प्रकार सूचना का संप्रत्यय, संचार, नियन्त्रण, आँकड़े, आकृति, शिक्षा, ज्ञान, अर्थ, समझ, मानसिक उद्दीपन, प्रतिरूप (pattern) प्रत्यक्षीकरण, प्रतिनिधित्वता आदि से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है। आज के समाज में सूचना का संप्रत्यय एक केन्द्रीय भूमिका निभाता है।

सूचना की विशेषताएँ (Characteristics of Information)

अपेक्षित या सार्थक सूचना वह है जिसका प्रयोग किया जाता है तथा जो मूल्य को जन्म देती है। सार्थक सूचना में उद्देश्य छिपा होता है। समस्या समाधान में सहायक होती है, विश्वसनीयता होती है तथा सही व्यक्ति की ओर संकेत करती है। साथ ही, उद्देश्य पूर्ति हेतु यह समय समय एवं सही तरीके से उचित माध्यम का प्रयोग करती है जिसका प्रयोगकर्त्ता को ठीक से बोध होता है। संक्षेप, सूचना की अपेक्षित विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) विश्वसनीयता (Reliability)
(2) वैधता (Validity)
(3) समयबद्धता (Timely)
(4) उद्देश्यपूर्णता (Fit for Purpose)
(5) सहेजता (Accessible)
(6) मूल्य प्रभाविता (Cost Effective)

(7) पर्याप्तता (Sufficiently, Accurate)

(8) सार्थकता (Relevant)

(9) प्रसार (Right Level of Detail)

(10) उचित स्त्रोत (Proper Source)

(11) प्रयोगकर्त्ता की समझ सीमा (Understandable by the User)

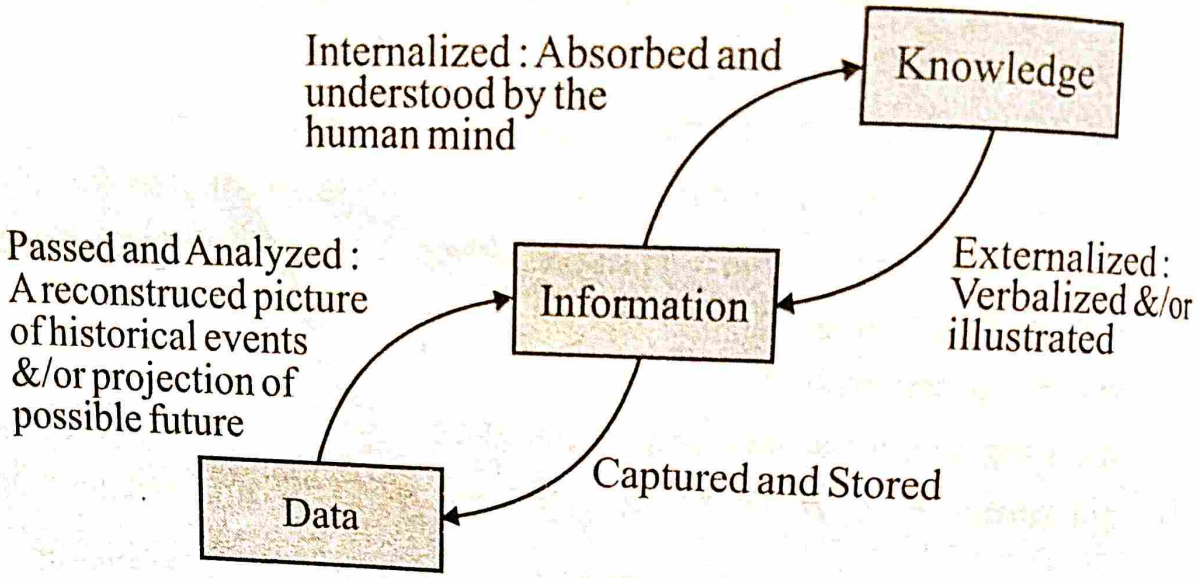

Fig. Relationship amongst Knowledge, Information and Data

सूचना के स्तर (Levels of Information)

सूचना के मुख्य स्तर पाँच हैं—

- Statistics
- Apobetics
- Pragmatics
- Semantics
- Syntax

सूचना के प्रकार (Types of Information)

सूचना प्राप्ति के विभिन्न प्रकार निम्नलिखित हैं—

- सन्दर्भ सामग्री (Referednce Materials)
- जनरल्स (Journals)
- मैगजीन्स (Magazines)
- समाचार-पत्र (Nespapers)
- सांख्यिकी (Statistics)
- इन्टरनेट (Internet)
- पुस्तकें (Books) आदि।

Types of Information

We get information from the following types.

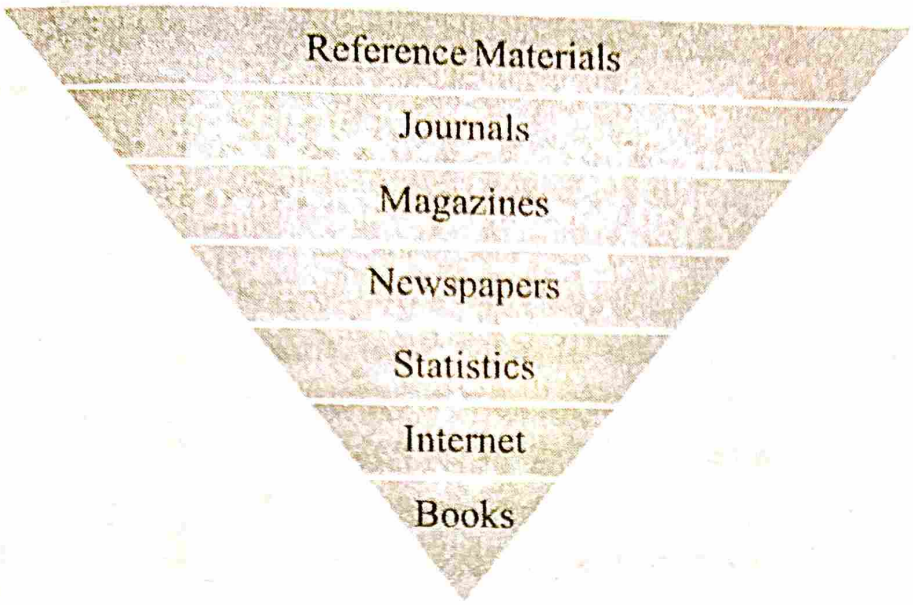

- इस प्रकार की योग्यता की सूचना में कोई आवश्यकता नहीं पड़ती।
- सूचना एक प्रकार से संवर्धित (refind) डेटा है।
- सूचना तैयार किया गया डेटा (processed) है जिसे सुरक्षित तरीके से रखा जा सकता है। सूचना का विभिन्न प्रकार के आँकड़ों से सम्बन्ध होता है तथा यह विशेष सन्दर्भ रखता है।
- सूचना को stored, analyzed, displayed, communicated सामग्री के रूप में देखा जाता है।
- सूचना सन्दर्भ के साथ डेटा है।
- सूचना संदेशों के प्रवाह के परिणामस्वरूप प्राप्त होती है।
- सूचना संचार के विभिन्न रूपों में हमारे निर्णयों एवं व्यवहार पर प्रभाव डालती है। सूचना में बुद्धि का स्तर, शोध से प्राप्त ज्ञान, तथ्य (facts), आँकड़े, सूचना की मात्रा का अकात्मक माप आदि निहित है।